अंतिम पुनरावृत्ति अध्ययन सामग्री

कक्षा-12 विषय-हिन्दी (आधार) सत्र-2020-21

पाठ्य पुस्तक आरोह भाग 2 से बहुविकल्पी प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)

[1] मेरा आदर्श-समाज स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता पर आधारित होगा। क्या यह ठीक नहीं है। भ्रातृता अर्थात भाईचारे से किसी को क्या आपत्ति हो सकती है ? किसी भी आदर्श-समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सब का भाग होना चाहिए तथा सबको उसकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। तात्पर्य यह है कि दूध पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है, और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है, लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति और समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इसमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो ।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सही विकल्पों का चयन कीजिए –

(क) प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

[अ] भक्तिन [ब] बाजार दर्शन [स] नमक [द] श्रम विभाजन और जाति-प्रथा

(ख) लेखक के अनुसार आदर्श समाज किस पर आधारित होना चाहिए -

[अ] भ्रातृता [ब] स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता पर [स] समता पर [द] विकास पर

(ग) गद्यांश के आधार पर लोकतंत्र है –

[अ] लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति और समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है।

[ब] लोकतंत्र एक शासन प्रणाली है।

[स] लोकतंत्र एक व्यवस्था है।

[द] अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है।

(घ) 'दूध पानी के मिश्रण की तरह' मिलने से तात्पर्य है –

[अ] दूध को पानी में मिलाना [ब] अनुभवों का आदान-प्रदान करना

[स] भाईचारे से मिल-जुल कर रहना [द] लोकतंत्र में रहना

(ड) 'भ्रातृता' – से क्या तात्पर्य है ?

[अ] भाईचारे से [ब] लोकतंत्र से [स] सभी भाई-बहनों से [द] उपर्युक्त सभी

[2] सेवक धर्म में हनुमान जी से स्पर्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री ना होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है- नाम है लछमिन अर्थात लक्ष्मी। पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अपने अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है, पर भक्तिन बहुत समझदार है क्योंकि वह अपना समृद्धि सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया; पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूँ ।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सही विकल्पों का चयन कीजिए –

[क] गद्यांश के पाठ एवं लेखक/ लेखिका का नाम बताइए –

[अ] भक्तिन – महादेवी वर्मा [ब] बाजार दर्शन – जैनेन्द्र कुमार

[स] नमक - रजिया सज्जाद जहीर [द] पहलवान की ढोलक (फणीश्वर नाथ रेणु

[ख] सेवक-धर्म में भक्तिन की तुलना किससे की गई है ?

[अ] महादेवी वर्मा से [ब] हनुमान से [स] नौकर से [द] किसान से

[ग] 'शेष इतिवृत्त'- शब्द का सही अर्थ है -

[अ] जन्म मरण [ब] जीवन कथा [स] परिचय [द] सम्पूर्ण कथा

[घ] भक्तिन को समझदार क्यों कहा है?

[अ] क्योंकि वह अपना समृद्धि सूचक नाम किसी को बताती नहीं

[ब] वह प्रत्येक कार्य को करने में कुशल थी।

[स] वह अपना नाम छुपाती थी।

[द] वह नौकरी की खोज में आई थी और ईमानदार थी।

[ड] भक्तिन किसकी कन्या थी?

[अ] अनामधन्या गोपालिका की [ब] गरीब किसान की

[स] अंजना की [द] मजदूर परिवार की

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30 – 40 शब्दों में दीजिए – (2 X 2 = 4)

प्र.1 भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी? उसको यह नाम किसने और क्यों दिया होगा?

उत्तर - भक्तिन का वास्तविक नाम था – लक्ष्मी। उसे नाम उसके माता-पिता ने दिया होगा। उन्होंने सोचा होगा कि उसके पैदा होने से वे धन-धान्य से भरपूर हो जाएंगे। यह लड़की जहां जाएगी वहां धन की वर्षा होगी, परंतु हुआ इसके विपरीत। इसलिए उसने अपना वास्तविक नाम लोगों से छुपाने का भरसक प्रयास किया।

प्र. 2 भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई ?

उत्तर- भक्तिन के आ जाने से महादेवी का खाना पहनना देहाती ढर्रे में ढल गया भक्तिन जो कुछ बनाना जानती थी महादेवी को भी वैसा ही खाना पड़ा। उसे रात को बने मकई के साथ मट्ठा पीना पड़ा। बाजरे के तिल वाले पुए खाने पड़े। इन सब चीजों को प्राय: देहाती लोग खाते हैं।

प्र. 3 - भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा ?

उत्तर - गुणों के साथ-साथ भक्तिन के व्यक्तित्व में अनेक दुर्गुण भी निहित थे –

1. वह घर में इधर-उधर पड़े रुपये-पैसे को भंडार घर की मटकी में छुपा देती है और अपने इस कार्य को चोरी नहीं मानती थी।

2. महादेवी के क्रोध से बचने के लिए भक्तिन बात को इधर-उधर करके बताने को झूठ नहीं मानती। अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए वह तर्क-वितर्क भी करती है।

3. वह दूसरों को अपनी इच्छानुसार बदल देना चाहती है पर स्वयं बिलकुल नहीं बदलती।

4. वह शास्त्रीय बातों की व्याख्या अपनी इच्छानुसार करती थी।

बाजार दर्शन (जैनेंद्र कुमार)

प्र 4 - बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है ?

उत्तर - बाजार का जादू चढ़ने पर मनुष्य बाजार की आकर्षक वस्तुओं के वश में हो जाता है। लालच में आकर गैर जरूरी चीजों को खरीदता चला जाता है। परंतु जब वह जादू उतरता है तो ज्ञात होता है, कि वे वस्तुएं उसे आराम देने की बजाय उसकी आराम में खलल डालने वाली है।

प्र 5 - 'बाजारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं ?

उत्तर - 'बाजारूपन' का आशय है- उसकी ऊपरी चमक-दमक और दिखावा। जब माल बेचने वाले बेकार की चीजों को आकर्षक बना कर ग्राहक को ठगने लगते हैं तो वहाँ बाजारूपन आ जाता है। उसी प्रकार जब ग्राहक जरूरत की चीजों की बजाय अपनी मनी पावर दिखाने के लिए बाजार से माल खरीदता है तो वहाँ भी 'बाजारूपन' होता है इस व्यवहार में छल कपट और शोषण का बोलबाला होता है तथा जो मनुष्य बाजार से आवश्यकता की चीजें ही खरीदते हैं वे बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं।

प्र 6 - बाज़ार दर्शन पाठ में बाज़ार जाने या न जाने के संदर्भ में मन की कई स्थितियों का ज़िक्र आया है। आप इन स्थितियों से जुड़े अपने अनुभवों का वर्णन कीजिए।

1. मन खाली हो 2. मन खाली न हो 3. मन बंद हो 4. मन में नकार हो

उत्तर - 1. मन खाली हो – जब मैं केवल यूँ ही घूमने की दृष्टि से बाज़ार जाती हूँ तो न चाहते हुए भी कई सारी महंगी चीजें घर ले आती हूँ और बाद में पता चलता है कि इन वस्तुओं की वास्तविक कीमत तो बहुत कम है और मैं केवल उनके आकर्षण में फँसकर इन्हें खरीद लाई।

2. मन खाली न हो – एक बार मुझे बाज़ार से एक लाल रंग की साड़ी खरीदनी थी तो मैं सीधे साड़ी की दुकान पर पहुँची उस दुकान में अन्य कई तरह के परिधान मुझे आकर्षित कर रहें थे परन्तु मेरा विचार पक्का होने के कारण मैं सीधे साड़ी वाले काउंटर पर पहुँची और अपनी मनपसंद साड़ी खरीदकर बाहर आ गई।

3. मन बंद हो – कभी कभी जब मन बड़ा उदास होता है, तब बाज़ार की रंग-बिरंगी वस्तुएँ भी मुझे आकर्षित नहीं करती हैं मैं बिना कुछ लिए यूँ हीं घर चला आता हूँ।

4. मन में नकार हो – एक बार मेरे पड़ोसी ने मुझे नकली वस्तुओं के बारे में कुछ इस तरह समझाया कि मेरे मन में वस्तुओं के प्रति एक प्रकार की नकारात्मकता आ गई मुझे बाज़ार की सभी वस्तुओं में कोई न कोई कमी दिखाई देने लगी। मुझे लगा जैसे सारी वस्तुएँ अपने मापदंडों पर खरी नहीं हैं।

काले मेघा पानी दे (धर्मवीर भारती)

प्र 7 - जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

उत्तर - जीजी की मान्यता थी कि देवता से कुछ पाने के लिए पहले कुछ दान और त्याग करना पड़ता है। किसान 5-6 सेर अनाज को बीज के रूप में त्यागता है, तभी वह खेतों में 30-40 मन अनाज उगा पाता है। यही बात इंदरसेना पर भी लागू होती है। इंदरसेना लोगों से जल का दान कराके इंद्र को कराती है, तभी भगवान इंद्र अपनी ओर से झमाझम बरसात करते है। एक प्रकार से इंदर सेना जल की बुआई करते है।

प्र 8 आपको जीजी की आस्था अधिक प्रभावित करती है या लेखक के तर्क ?

उत्तर- इस पाठ को पढ़कर हमें जीजी की आस्था अधिक प्रभावित करती है। कारण यह है कि जीजी की व्याख्याएँ तर्कसंगत हैं। वह परम्पराओं पर आस्था रखती है । वह अनपढ़ होते हुए भी परम्पराओं के मर्म को जानती है। उसके व्यक्तित्व मे अपार ममता है, स्नेह और आत्मविश्वास है। यह विश्वास लेखक के तर्कों को तहस-नहस कर देता है।

प्र 9 - लोगों ने लड़कों की टोली को मेढक–मंडली नाम किस आधार पर दिया? यह टोली अपने आपको इंदर सेना कहकर क्यों बुलाती थी?

उत्तर- गाँव के किशोर, बच्चे कीचड़ में लथपथ होकर गली-गली घूमकर लोगों से पानी माँगते थे। गाँव के कुछ लोगों को लड़कों का नंग-धड़ंग होकर कीचड़-कादो में लथपथ होना बुरा लगता था। वे इसे गँवारपन और अंधविश्वास समझते थे इसलिए उन्होंने लड़कों की टोली को मेढक मंडली-नाम दिया था।

बच्चों का ऐसा मानना था कि वे इंद्र की सेना के सैनिक हैं और उसी के लिए वे लोगों से पानी का दान माँगते हैं। अत: वे स्वयं को इंदर सेना के नाम से पुकारते थे।

<u>पहलवान की ढोलक (फणीश्वर नाथ रेणु)</u>

प्र 10- गाँव में व्याप्त महामारी की भयावहता का वर्णन कीजिए ।

उत्तर - जाड़े की ऋतु में गाँव में मलेरिया और हैजे का प्रकोप इतना भयानक था कि गाँववासी भयभीत होकर थरथर काँपने लगे थे । रात्रि में गीदड़ों व उल्लुओं की आवाज और डरा देती थी। कुत्ते भावी आशंका में रोने लगते थे । अनावृष्टि के कारण अन्न की कमी थी। निर्धनता में औषधि या पथ्य कहां मिलता ।

प्र 11- लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोलक है ?

उत्तर - लुट्टन पहलवान ने कुश्ती के दाँव-पेंच किसी उस्ताद से नहीं सीखे थे। उसे कुश्ती करते हुए ढोलक की उत्तेजक आवाज से संघर्ष की प्रेरणा मिलती थी। जब ढोलक पर थाप पड़ती थी तो पहलवान की नसें उत्तेजित हो जाती थी। उसका तन-बदन लड़ने के लिए मचलने लगता था। इस प्रकार से उसने ढोल को ही अपना गुरु मान लिया था।

प्र 12- ढोलक की आवाज़ का पूरे गाँव पर क्या असर होता था?

उत्तर:- ढोलक की आवाज़ से रात की विभीषिका और सन्नाटा कम होता था महामारी से पीड़ित लोगों की नसों में बिजली सी दौड़ जाती थी, उनकी आँखों के सामने दंगल का दृश्य साकार हो जाता था और वे अपनी पीड़ा भूल खुशी-खुशी मौत को गले लगा लेते थे। इस प्रकार ढोल की आवाज मृतप्राय गाँववालों की नसों में संजीवनी शक्ति को भर बीमारी से लड़ने की प्रेरणा देती थी।

<u>नमक (रजिया सज्जाद जहीर)</u>

प्र 13- सफिया के भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने से क्यों मना कर दिया?

उत्तर - सफिया के भाई ने नमक की पुड़िया ले जाने के लिए तीन कारणों से मना कर दिया -

1- भारत में नमक की कोई कमी नहीं है। अतः उन्हें पाकिस्तानी नमक ले जाने की कोई जरूरत नहीं है ।

2 - पाकिस्तान से भारत में नमक ले जाना गैरकानूनी है ।

3 - कस्टम अधिकारी नमक पाए जाने पर उसके सामान की चिंदी-चिंदी कर डालेंगे और पकड़े जाने पर अपमान भी होगा ।

प्र 14- 'सीमाएँ बट जाने से दिल नहीं बँटा करते' – नमक कहानी के आधार पर कथन को सिद्ध कीजिए।

उत्तर - यह कटु सत्य है कि मानचित्र पर एक लकीर खींच देने भर से जनता नहीं बँटती। जमीन तो बँट जाती है किंतु जनता का लगाव मूल स्थान से बना रहता है । इस कहानी का यही संदेश है।

प्र 15 नमक की पुड़िया ले जाने के संबंध में सफ़िया के मन में क्या द्वंद्व था?

उत्तर:- नमक की पुड़िया ले जाने के संबंध में सफ़िया के मन में यह द्वंद्व था कि प्यार के इस तोहफे नमक की पुड़िया को चोरी-छिपे ले जाए या कस्टम अधिकारियों को दिखाकर ले जाए ।

<u>श्रम विभाजन और जाति-प्रथा (बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर)</u>

प्र 16- लेखक के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है?

उत्तर - लेखक के अनुसार दासता केवल कानूनी पराधीनता नहीं है। बल्कि इसकी व्यापक परिभाषा तो व्यक्ति को अपना पेशा चुनने की आज़ादी न देना है। सामाजिक दासता की स्थिति में कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा तय किए गए व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करने को विवश होना पड़ता है। अपनी इच्छा के विरुद्ध पैतृक पेशे अपनाने पड़ते हैं।

प्र 17- आंबेडकर की कल्पना के आदर्श समाज के तीन बिंदुओं का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर - आंबेडकर जी लिखते हैं कि मनुष्यों की क्षमता तीन बातों पर निर्भर रहती है -

(1) शारीरिक वंश परंपरा (2) सामाजिक उत्तराधिकार (3) मनुष्य के अपने प्रयत्न

लेखक का मत है कि मनुष्य के अपने प्रयत्न उसके बस में है। इसलिए उसके आधार पर किसी मनुष्य के साथ असमान व्यवहार करना अनुचित नहीं कहा जा सकता। परंतु यह भी ध्यान रखना चाहिए कि सभी मनुष्यों को प्रयत्न करने के समान अवसर उपलब्ध होने चाहिए। शारीरिक वंश परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार दोनों मनुष्यों के बस में नहीं हैं। यह जन्मजात होते हैं । अतः इसके आधार पर किसी का वर्ग और कार्य निश्चित नहीं होना चाहिए। न ही जन्म के आधार पर किसी को उत्तम या हीन मानना चाहिए।

प्र 18- जाति प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं?

उत्तर:- जाति प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्न तर्क हैं

- विभाजन अस्वाभाविक है।
- श्रम-विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है।
- व्यक्ति की क्षमताओं की उपेक्षा की जाती है।
- व्यक्ति के जन्म से पहले ही उसका पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। उसे पेशा चुनने की आज़ादी नहीं होती।
- व्यक्ति को अपना व्यवसाय बदलने की अनुमति नहीं देती।
- संकट में भी व्यवसाय बदलने की अनुमति नहीं होती जिससे कभी-कभी भूखों मरने की नौबत भी आ जाती है।

<u>काव्य खंड से प्रश्नोत्तर</u>

निम्न पद्यांश को पढकर सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए ।

आंगन में ठुनक रहा है, जिदयाया है,

बालक तो हई चांद पे ललचाया है।

दर्पण उसे दे के कह रही है माँ,

देख, आईने में चांद उतर आया है ।

(क) प्रस्तुत काव्यांश के कवि का नाम है :-

(i) बच्चन जी (ii) दुष्यंत कुमार (iii) फिराक गोरखपुरी (iv) कुंवर नारायण

(ख) प्रस्तुत काव्यांश की भाषागत विशेषता है :-

(i) उर्दू मिश्रित खडीबोली (ii) ब्रज भाषा (iii) राजस्थानी (iv) कोई नहीं

(ग) प्रस्तुत काव्यांश में प्रयुक्त छंद है?

(i) मुक्त छंद (ii) दोहा छंद (iii) रुबाई छंद (iv) कवित्त छंद

(घ) बालक के जिद का कारण निम्न में से क्या है?

(i) उसे दर्पण चाहिए (ii) उसे चांद चाहिए (iii) उसे ठुनकना है (iv) उसे कुछ नही चाहिए।

(ड) माँ ने बालक की जिद को कैसे पूरा किया?

(i) उसे खाना खिलाकर (ii) उसे बाहर ले जाकर (iii) आईने में चांद दिखाकर (iv) उक्त में से कोई नही

किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी,भाट,

चाकर, चपला, नट, चोर, चार, चेटकी।

पेटको पढ़त, गुन गुढ़त, चढ़त गिरी,

अटत गहन-गन अहन अखेटकी।।

ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,

पेट ही की पचित, बेचत बेटा-बेटकी।।

'तुलसी ' बुझाई एक राम घनस्याम ही तें,

आग बड़वागितें बड़ी हैं आग पेटकी।।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार सही विकल्पों का चयन कीजिए –

1 कवि किस युग की स्थिति का वर्णन कर रहा है -

(क) सतयुग (ख) धर्म युग (ग) कलियुग (घ) आधुनिक काल

2 तुलसी दास जी ने घनस्याम किसे कहा है

(क) काले बादल को (ख) कृष्ण को (ग) राम को (घ) अपने आप को

3 प्रिय बेटे और बेटी को बेचने का कार्य भी किसी को क्यों करना पड़ता है ?

(क) धन कमाने के लिए (ख) मजबूरी में (3) पेट की आग बुझाने के लिए (4) इन में से कोई नहीं

4 काव्यांश की भाषा है-

(क) हिंदी (ख) खड़ी बोली (ग) ब्रज (घ) अवधि

5 कौनसी आग को बड़वागितें से बड़ी कहा गया है-

(क) जंगल की आग (ख) सिर की आग (गुस्सा) (ग) पेट की आग (घ) पेट्रोल की आग

प्र. बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?

उ. पक्षी दिनभर भोजन की तलाश में भटकते हैं। उनके बच्चे दिनभर उनकी प्रतीक्षा में रहते हैं। शाम को उनके लौटने के समय बच्चे कुछ पाने की आशा में घोंसलों से झाँक रहे होंगे।

प्र. दिन जल्दी-जल्दी ढलता है,कविता का सन्देश/प्रतिपाद्य लिखिए –

उ. (i) समय गतिशील है, हमें लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमेशा अग्रसर रहना चाहिए |

(ii) जीवन की क्षणिकता, मृत्यु कभी भी आ सकती है |

(iii) हमेशा आशावादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए|

प्र. दिन जल्दी-जल्दी ढलता है – की आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?

उ. दिन जल्दी-जल्दी ढलता है-की आवृत्ति से यह प्रकट होता है कि लक्ष्य की तरफ़ बढ़ने वाले मनुष्य को समय बीतने का पता नहीं चलता। गंतव्य का स्मरण पथिक के कदमों में स्फूर्ति भर देता है।

प्र. कविता के बहाने कविता में कवि क्या कहना चाहता है

उ. इस कविता में कवि ने कविता की व्यापकता को दर्शाया है | चिड़िया की उडान,फूलों की मुसकान और बच्चों की क्रीड़ा कविता के प्रतिपाद्य हैं,परन्तु जहाँ सबकी अपनी सीमा है, वहीं बच्चे के सामर्थ्य की तरह कविता में असीम संभावनाएं हैं | जहाँ कहीं रचनात्मक उर्जा होगी, वहाँ सीमाओं के बंधन खुद –ब –खुद टूट जाते हैं | कविता के बहाने यह यात्रा है चिड़िया, फूल से लेकर बच्चे तक की |

प्र. कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?

उ. कविता और बच्चे दोनों अपने स्वभाववश खेलते हैं। खेल-खेल में वे अपनी सीमा, अपने-परायों का भेद भूल जाते हैं। जिस प्रकार एक शरारती बच्चा किसी की पकड़ में नहीं आता उसी प्रकार कविता में उलझा दी गई एक बात तमाम कोशिशों के बावजूद समझने के योग्य नहीं रह जाती चाहे उसके लिए कितने प्रयास किए जाएं, वह एक शरारती बच्चे की तरह हाथों से फिसल जाती है।

प्र. 'उड़ने' और 'खिलने' का कविता से क्या संबंध बनता है?

उ. पंछी की उड़ान और कवि की कल्पना की उड़ान दोनों दूर तक जाती हैं। कवि की कविता में कल्पना की उड़ान होती है। इसीलिए कहा गया है –

'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि'

जिस प्रकार फूल खिलकर अपनी सुगंध एवं सौंदर्य से लोगों को आनंद प्रदान करता है उसी प्रकार कविता सदैव खिली रहकर लोगों को उसका रसपान कराती है।

प्र. कैमरे में बंद अपाहिज करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है – विचार कीजिए।

उ. दूरदर्शन पर एक अपाहिज का साक्षात्कार, व्यावसायिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए दिखाया जाता है। दूरदर्शन पर एक अपाहिज व्यक्ति को प्रदर्शन की वस्तु मान कर उसके मन की पीड़ा को कुरेदा जाता है, साक्षात्कारकर्ता को उसके निजी सुख दुख से कुछ लेना-देना नहीं होता है। यहाँ पर कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले इस प्रकार के अधिकतर कार्यक्रम केवल संवेदनशीलता का दिखावा करते हैं।

प्र. परदे पर वक्त की कीमत है कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नज़रिया किस रूप में रखा है?

उ. प्रसारण समय में रोचक सामग्री परोस पाना ही मीडिया-कर्मियों का एकमात्र उद्देश्य होता है। प्रसारण के समय में वे कार्यक्रम को अधिक से अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए सभी हथकंडे आजमा लेते हैं। उन्हें किसी की पीड़ा को कम नहीं बल्कि बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने की आदत होती है। मीडियाकर्मी को व्यावसायिक उद्देश्य पूरा करने से सरोकार रहता है। उनका सामाजिक सरोकार या पीड़ा को दिखाना मात्र एक दिखावा होता है।

प्र. उषा की सुन्दरता को चित्रित करने के लिए कवि ने किन –किन उपमानों का प्रयोग किया है |

उ. 1 नील नभ के समान |

2 राख से लीपा हुआ चौका |

3 लाल केसर से धुली हुई काली सिल |

4 स्लेट पर लाल खड़िया मल दी हो |

प्र. कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्दचित्र है?

उ. कवि ने प्रकृति की गति को शब्दों में बाँधने का अद्भुत प्रयास किया है। निम्नलिखित उपमानों में ग्रामीण जनजीवन की गतिशील झाँकी स्पष्ट दिखाई देती है –

वहाँ सिल है, राख से लीपा हुआ चौका है और स्लेट की कालिमा पर चाक से रंग मलते अदृश्य बच्चों के नन्हें हाथ।

यह एक ऐसे दिन की शुरुआत है, जहाँ रंग है, गति है और भविष्य की उजास है।

प्र. तुलसीदास के कवित्त के आधार पर तत्कालीन समाज की आर्थिक विषमता पर प्रकाश डालिए।

उ. तुलसीदास अपने युग के स्रष्टा एवं द्रष्टा थे। उन्होंने अपने युग की प्रत्येक स्थिति को गहराई से देखा एवं अनुभव किया था। लोगों के पास चूँकि धन की कमी थी इसलिए वे धन के लिए सभी प्रकार के अनैतिक कार्य करने लग गए थे। उन्होंने अपने बेटा-बेटी तक बेचने शुरू कर दिए ताकि कुछ पैसे मिल सकें। पेट की आग बुझाने के लिए हर अधर्मपूर्ण और नीच कार्य करने के लिए तैयार रहते थे। जब किसान के पास खेती न हो और व्यापारी के पास व्यापार न हो तो ऐसा होना स्वाभाविक है।

प्र. व्याख्या करें –

जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।

उ. मूर्च्छित लक्ष्मण को गोद में लेकर श्री राम विलाप कर रहे हैं कि तुम्हारे बिना मेरी दशा ऐसी हो गई है जैसे पंख बिना पक्षी, मणि बिना सर्प और सूँड बिना श्रेष्ठ हाथी की स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है। यदि तुम्हारे बिना कहीं दुर्भाग्य मुझे जीवित रखे तो मेरा जीवन भी ऐसा ही होगा।

प्र. शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

उ. लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर हनुमान संजीवनी बूटी लेने हिमालय पर्वत जाते हैं उन्हें आने में विलंब हो जाने पर सब बहुत चिंतित व दुखी हो जाते हैं। जब हनुमान संजीवनी बूटी के साथ हिमालय पर्वत लेकर आ जाते हैं तब करुण रस के बीच वीर रस का संचार हो जाता है।

प्र. किस्मत हमको रो लेवे है हम किस्मत को रो ले हैं – इस पंक्ति में शायर की किस्मत के साथ तना-तनी का रिश्ता अभिव्यक्त हुआ है। चर्चा कीजिए।

उ. कवि को निराशा के क्षणों में ऐसा लगता है कि किस्मत ने उसका साथ नहीं दिया। कवि कहता है कि मैं किस्मत पर रोता हूँ और किस्मत मुझे उदास देखकर रोती है। इस प्रकार मैं और किस्मत दोनों एक जैसे हैं। दोनों असफलता और अभाव के कारण रोते रहते हैं।

<u>जनसंचार से संबंधित वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर (अंक : 5) बहुविकल्प प्रश्न</u>

प्र. ब्रेकिंग न्यूज किसे कहते हैं?

उ. ऐसा समाचार जो दर्शकों तक कम से कम शब्दों में तत्काल पहुंचाया जाना जरूरी हो, उसे ब्रेकिंग न्यूज कहते हैं। इसमें केवल घटना की सूचना दी जातीहै।

प्र. डेड लाइन किसे कहते हैं?

उ. डेडलाइन किसी समाचार पत्र की वह समय सीमा है जब तक कि समाचारों को वह कवर कर सकता है जैसे कोई प्रातः कालीन समाचार पत्र रात दस बजे तक समाचार कवर करता है।

प्र. वॉचडॉग पत्रकारिता क्या है?

उ. सरकारी कामकाज पर निगाह रखते हुए किसी गड़बड़ी का पर्दाफाश करना वॉचडॉग पत्रकारिता कहलाती है।

प्र. संपादक के कार्य क्या-क्या हैं?

उ. समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों की प्रामाणिकता, निष्पक्षता, संतुलन व महत्त्व के अनुसार समाचार पत्र में स्थान निर्धारण करना आदि कार्य संपादक के प्रमुख कार्य हैं।

प्र. पत्रकार किसे कहते हैं?

उ. समाज की विभिन्न सूचनाओं, समाचारों को संकलित-संपादित कर समाचार के रूप में किसी समाचार पत्र के लिए तैयार करने वाले को पत्रकार कहते हैं।

प्र. 'बीट' से क्या आशय है?

उ. समाचार पत्र में समाचार कई तरह के होते हैं। जैसे- राजनीति, आर्थिक, अपराध, शिक्षा, फिल्म, कृषि, विज्ञान आदि। संवाददाताओं का कार्य विभाजन इनके लिए रुचि को ध्यान में रखते हुए किया जाता है, मीडिया की भाषा में इसे 'बीट' कहते हैं।

प्र. भारत में पहला समाचार पत्र कब और कहां से प्रकाशित हुआ?

उ. बंगाल गजट, जिसका प्रकाशन कलकत्ता (अब कोलकाता) से सन 1780 में हुआ। इसके संपादक जेम्स ऑगस्ट हिक्की थे।

प्र. प्रिंट मीडिया की दो विशेषताएं लिखिए।

उ. चिंतन, विचार व विश्लेषण के आधार पर तैयार होते हैं। छपे हुए शब्दों का स्थायित्व होता है।

प्र. पीत पत्रकारिता से क्या आशय है?

उ. सनसनीखेज समाचारों को मीडिया में जारी करने अथवा नहीं करने के बदले में जो धन का लेन-देन चलता है, उसे पीत पत्रकारिता कहते हैं।

प्र. 'समाचार' शब्द को परिभाषित कीजिए।

उ. किसी भी ताजा घटना, विचार अथवा समस्या की रिपोर्टिंग जिसमें अधिक लोगों की रुचि और उपयोगिता जुड़ी हुई हो उस लेखन को समाचार कहते हैं।

प्र. जनसंचार के किन्हीं दो कार्यों पर प्रकाश डालिए?

उ. (1) सामाजिक संपर्क स्थापित करना (2) स्वयं को अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास।

प्र. इंटरनेट तेजी से लोकप्रिय क्यों हो रहा है? दो कारण लिखिए।

उ. (1) किसी भी समय हम स्वयं को अपडेट कर सकते हैं

(2) बहुत कम समय में बहुत अधिक जानकारी का सुलभ होना ।

प्र. संपादन के किन्हीं दो सिद्धांतों का उल्लेख कीजिए?

उ. संपादन के दो सिद्धांत हैं- वस्तुपरकता एवं निष्पक्षता।

प्र. फ्री-लांसर पत्रकार से आप क्या समझते हैं?

उ. भुगतान के आधार पर काम करने वाले पत्रकार को फ्री-लांसर पत्रकार कहते हैं।

प्र. पत्रकारिता लेखन में सर्वाधिक महत्त्व किस बात का है?

उ. पत्रकारिता में सर्वाधिक महत्त्व समसामयिक घटनाओं का है।

प्र. अखबार अन्य माध्यमों से अधिक लोकप्रिय क्यों है?

उ. अखबार में अन्य माध्यमों की तुलना में स्थायित्व अधिक है। इसे हम जब चाहें, जैसे चाहें और जहां चाहें सुविधानुसार देख-पढ़ सकते हैं।

प्र. संचार और जनसंचार के विविध माध्यम कौन-कौन से हैं?

उ. टेलीफोन, इंटरनेट, फैक्स, समाचार-पत्र, रेडियो, टेलीविजन और सिनेमा आदि।

प्र. संचार के तत्त्व कौन-कौन से हैं?

उ. संचारक, स्रोत, संदेश, डीकोडिंग, फीडबैक, प्राप्तकर्ता आदि।

प्र. 'डीकोडिंग' का क्या अर्थ है?

उ. 'डीकोडिंग' का अर्थ है - प्राप्त संदेशों में निहित अर्थ को समझने की कोशिश।

प्र. उदंत मार्तण्ड का प्रकाशन कब और कहाँ हुआ ?

उ. साप्ताहिक पत्र उदंत मार्तण्ड 1826 ई. में कोलकाता से जुगलकिशोर के संपादकत्व में प्रकाशित हुआ।

प्र. रेडियो का आविष्कार कब और किसने किया?

उ. सन् 1895 ई. में जी मार्कोनी ने।

प्र. सिनेमा का आविष्कार कब और किसने किया?

उ. सन् 1883 ई. में थामस अल्वा एडीसन ने।

प्र. समाचार में कौन-से तत्त्व आवश्यक है?

उ. नवीनता, जनरुचि, निकटता, प्रभाव

प्र. पत्रकार की बैसाखियाँ किसे कहा जाता है?

उ. विश्वसनीयता, संतुलन, निष्पक्षता तथा स्पष्टता

प्र. 'अखबार' शब्द मूल रूप से किस भाषा का शब्द है?

उ. समाचार-पत्र को अरबी में अखबार कहते हैं। इसलिए ऐसा पत्र जिसमें खबरें ही खबरें हो, अखबार कहलाता है।

प्र. पत्रकारिता में छह ककार क्या हैं?

उ. पत्रकार कप्लिंग ने समाचार संकलन के लिए पाँच डब्ल्यू व एक एच का सिद्धांत दिया, इसे ही हिन्दी में छह ककार का सिद्धांत कहते हैं। ये ककार हैं- कहाँ, कब, क्या, किसने, क्यों और कैसे।

प्र. डेटलाइन किसे कहते हैं?

उ. प्रत्येक समाचार के शीर्षक के बाद और इंट्रो से पहले उस समाचार का स्थान व तारीख दी जाती है, उसे डेटलाइन कहते हैं।

प्र. अंशकालिक पत्रकार से आप क्या समझते हो?

उ. सीमित या कम समय के लिए काम करने वाले पत्रकार को अंशकालिक पत्रकार कहा जाता है। इन्हें प्रकाशित सामग्री के आधार पर पारिश्रमिक दिया जाता है।

प्र. पूर्णकालिक पत्रकार कौन होता है?

उ. ऐसा पत्रकार जो किसी समाचार संगठन में काम करता है और नियमित वेतन पाता है उसे पूर्णकालिक पत्रकार कहा जाता है।

प्र. संवाददाता या रिपोर्टर किसे कहते है?

उ. अखबारों में समाचार लिखने वालों को संवाददाता या रिपोर्टर कहते हैं।

प्र. फीडबैक किसे कहते है?

उ. संचार प्रक्रिया में संदेश को प्राप्त करने वाला जो सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया करता है उसे फीडबैक कहते हैं।

प्र. प्रिंटलाइन को परिभाषित कीजिए।

उ. प्रत्येक समाचार -पत्र या पत्रिका में संपादक, प्रकाशक और मुद्रक का नाम अनिवार्य रूप से प्रकाशित किया जाता है, इस विवरण को ही प्रिंटलाइन कहते हैं।

<u>पाठ्यपुस्तक – वितान भाग-2</u>

इस पाठ्यपुस्तक से 10 बहुविकल्पी प्रश्न पूछे जाएँगे (1X10= 10 अंक)

<u>पाठ 1 सिल्वर वैडिंग – मनोहर श्याम जोशी</u>

सिल्वर वैडिंग (विवाह की 25वीं वर्षगांठ) मनोहर श्याम जोशी की एक लंबी कहानी है| इस पाठ में पीढ़ी के अन्तराल से पैदा हुई बिखराव की पीड़ा का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया गया है| सैक्शन ऑफिसर यशोधर पंत (वाई. डी. पंत) आधुनिकता के दौर में भी परंपरागत मूल्यों को हर हाल में जीवित रखना चाहते हैं| उनका उसूल-पसंद होना दफ्तर एवं घर के लोगों के लिए परेशानी का कारण बन गया था| कहानी के मुख्य पात्र यशोधर पंत अपने आदर्श किशनदा से अधिक प्रभावित हैं, यशोधर बाबू को दिल्ली में अपने पाँव जमाने में किशनदा ने सहायता की थी, अतः वे उनके आदर्श बन गए| यशोधर बाबू के तीन बेटे हैं| बड़ा बेटा भूषण, विज्ञापन कम्पनी में काम करता है, दूसरा बेटा आई.ए.एस. की तैयारी कर रहा है और तीसरा छात्रवृत्ति लेकर अमेरिका जा चुका है| बेटी भी डाक्टरी की पढ़ाई के लिए अमेरिका जाना चाहती है, वह विवाह हेतु किसी भी वर को पसंद नहीं करती| यशोधर बाबू बच्चों की तरक्की से खुश हैं किंतु परंपरागत संस्कारों के कारण वे दुविधा में हैं| उनकी पत्नी ने स्वयं को बच्चों की सोच के अनुसार ढाल लिया है| आधुनिक न होते हुए भी, बच्चों के ज़ोर देने पर वे अधिक माडर्न बन गई है| यशोधर पंत के बच्चे अपने पिताजी से बिना पूछे उनकी शादी की 25वीं सालगिरह पर पार्टी रखते हैं, जो यशोधर बाबू के उसूलों के खिलाफ था| यशोधर पंत को इस बात का पता घर आकर चलता है | जीवन के इस मोड़ पर वे स्वयं को अपने उसूलों के साथ अकेले पाते हैं | यशोधर बाबू की पत्नी पुरानी परंपराओं को छोड़ आधुनिकता में ढ़ल गई है, स्वयं को मॉडर्न समझती है, इसलिए यशोधर बाबू उन्हें 'चटाई का लहँगा', 'शानयल बुढ़िया', 'बूढ़ी मुँह मुहाँसे, लोग करें तमासे' आदि नामों से बुलाते हैं। यशोधर बाबू के चरित्र की विशेषताएँ:- कर्मठ एवं परिश्रमी, संवेदनशील, परंपरावादी |

1- परंपराओं और संस्कृति से ही किसी देश की पहचान कायम रहती है। सादगी से जीकर गृहस्थी को बचाया जा सकता है। यदि ऐसा न होता तो शायद यशोधर बाबू की संतानें पढ़-लिखकर योग्य न बनतीं -"सिल्वर वैडिंग" पाठ में यशोधर बाबू के चरित्र की कौनसी विशेषता परिलक्षित नहीं होती है ?

(क) कर्मठ एवं परिश्रमी (ख) संवेदनशील
(ग) धार्मिक एवं परंपरावादी व्यक्ति (घ) आधुनिक विचारों को मानने के कट्टर समर्थक
2- किशनदा उनके प्रेरक थे, उनसे अलग अपने को सोचना भी यशोधर बाबू के लिए मुश्किल था। जीवन का प्रेरणा-स्रोत तो सदा शक्ति एवं सामर्थ्य का सर्जक होता है | किशनदा की कौन-सी छवि यशोधर बाबू के मन में बसी हुई थी?
(क) उनकी दफ्तर में विभिन्न रूपों की छवि (ख) सैर पर निकलने वाली छवि,
(ग) एक आदर्शवादी व्यक्ति के रूप में, परोपकारी व्यक्ति (घ) उपर्युक्त सभी
3- ऑफिस में यशोधर बाबू की शादी की बात कैसे उठी? उत्तर - घड़ी के बारे में चर्चा करने पर
4- यशोधर बाबू अपने बच्चों से क्या चाहते हैं ? उत्तर- बच्चे उनसे औपचारिकतापूर्वक पूछकर ही काम करें
5- पार्टी के समय यशोधर बाबू पूजा-पाठ में क्यों व्यस्त हो गए? उत्तर- पार्टी में आए हुए लोगों से बचने के लिए

<u>पाठ 2 जूझ: आनंद यादव</u>

'जूझ' पाठ मराठी के प्रसिद्ध कथाकार आनंद यादव द्वारा रचित आत्मकथात्मक उपन्यास (स्वयं के जीवन–संघर्ष का वर्णन) है| इसका अनुवाद केशव प्रथम वीर ने किया है | आनंद के दादा(पिताजी) ने अपने स्वार्थवश उसे पाँचवीं कक्षा में ही विद्यालय में पढ़ाई करने से रोक लिया था | पढ़ाई पूरी न कर पाने के कारण, उसका मन उसे कचोटता रहता था| दादा ने अपने स्वार्थों के कारण उसकी पढ़ाई छुड़वा दी थी| वह जानता था कि दादा(पिताजी) उसे पाठशाला नहीं भेजेंगे| आनंद जीवन में आगे बढ़ना चाहता था|

आनंद अपनी माँ के साथ मिलकर एक योजना बनाकर गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्ति दत्ता जी राव के पास गया | दत्ता जी राव ने उनके दादा को आनंद को पढ़ाने के लिए प्रेरित किया | आनंद की पढ़ाई शुरू हो गई| शुरु में कुछ शरारती बच्चों ने उसे तंग किया किन्तु धीरे-धीरे उसका मन लगने लगा| उसने कक्षा के मानीटर वसंत पाटिल से दोस्ती कर ली जिससे उसे ठीक प्रकार से पढ़ाई करने की प्रेरणा मिली| कई परेशानियों से जूझते हुए आनंद ने शिक्षा का दामन नहीं छोड़ा| मराठी विषय के अध्यापक श्री सौंदलगेकर ने आनंद के हृदय में एक गहरी छाप छोड़ी| वे कविताएं छंदों की लय, गति, ताल के साथ गाकर तल्लीनता के साथ पढ़ते थे | आनंद ने भी उनसे प्रेरित होकर कविताओं में रूचि लेनी प्रारम्भ की| उसने खेतों में काम करते –करते कविताएँ कंठस्थ की| मास्टर ने उसकी कविताएं सुनकर उन्हें प्रोत्साहित किया, जिससे उसका आत्मविश्वास बढ़ने लगा और उसकी काव्य-प्रतिभा में निखार आने लगा |

दत्ता जी राव देसाई का चरित्र:- प्रभावशाली व्यक्तित्व, ग्रामीणों के मददगार, समझदार व्यक्ति
आंनदा का चरित्र:- पढ़ने की लालसा, वचनबद्धता, आत्मविश्वासी एवं कर्मठ बालक, कविता के प्रति झुकाव
1 'जूझ' - डॉ आनंद यादव द्वारा लिखा बहुचर्चित आत्मकथात्मक उपन्यास है । यह पाठ क्या शिक्षा देता है ?
(क) निरंतर संघर्ष कर आगे बढ़ा जा सकता है (ख) खेती न करने से मनुष्य तरक्की कर सकता है ।
(ग) संघर्ष करने से कुछ हासिल नहीं होता (घ) चोरी करने की
2 पढ़ने लिखने की बात पर बरहेला सूअर की तरह बालक आनंद के पिता गुर्राता था | बालक आनंद की तड़पन वह समझती थी - यहाँ 'वह' किसके लिए आया है ।
(क) दादी के लिए (ख) लेखक की दोस्त के लिए (ग) माँ के लिए (घ) नानी के लिए
3 'जूझ' कहानी के आधार पर आंनदा के चरित्र की विशेषताएँ हैं?
(क) पढ़ने की लालसा एवं कविता के प्रति झुकाव (ख) वचनबद्धता
(ग) आत्मविश्वासी एवं कर्मठ बालक (घ) उपर्युक्त सभी
4- लेखक की पढ़ाई में उसे किसने सहयोग दिया ? उत्तर- उसकी माँ तथा गाँव के प्रतिष्ठित दत्ताजी राव सरकार ने
5- 'जूझ' शीर्षक कैसे सार्थक है? उत्तर- संघर्ष के बाद सफलता अवश्य मिलती है |

पाठ 3 अतीत में दबे पाँव: ओम थानवी

यह ओम थानवी के यात्रा-वृत्तांत और रिपोर्ट का मिला-जुला रूप है| इस पाठ में विश्व के सबसे पुराने और नियोजित शहरों- मुअनजो-दड़ो तथा हड़प्पा का वर्णन किया है | पाकिस्तान के सिंध प्रांत में मुअनजो-दड़ो और पंजाब प्रांत में हड़प्पा नाम के दो नगरों को पुरातत्त्वविदों ने खुदाई के दौरान खोज निकाला था| मुअनजो-दड़ो (मुर्दों का टीला) ताम्रकाल का सबसे बड़ा शहर था| इसकी नगर योजना अद्वितीय है| लेखक ने खंडहर हो चुके टीलों, स्नानागार, मृद-भांडों, कुओं–तालाबों, मकानों व मार्गों का उल्लेख किया है जिनसे शहर की सुंदर नियोजन व्यवस्था का पता चलता है| बस्ती में घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर नहीं खुलते| मुअनजो-दड़ो में प्राचीन और बड़ा बौद्ध स्तूप(नागर भारत का सबसे पुराना लैंडस्केप) है | 1922 में जब राखलदास बनर्जी यहाँ आए, तब वे इसी स्तूप की खोजबीन करना चाहते थे| भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक जॉन मार्शल के निर्देश पर खुदाई का व्यापक अभियान शुरू हुआ |

सिंधु घाटी सभ्यता राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाजपोषित:- सिंधु घाटी सभ्यता में न तो भव्य राजमहल मिले हैं ओर न ही भव्य मंदिर| नरेश के सिर पर रखा मुकुट भी छोटा है| इसमें भव्यता व आडम्बर का अभाव रहा है| सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो "राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाजपोषित था|" सिन्धु सभ्यता के लोग अनुशासनप्रिय थे परन्तु यह अनुशासन किसी ताकत के बल के द्वारा कायम नहीं किया गया बल्कि लोग अपने मन और कर्म से ही अनुशासन प्रिय थे।

जल-संस्कृति:-प्रत्येक घर में स्नानघर था। हर घर में जल निकासी की व्यवस्था है, घर के भीतर से पानी या मैला पानी नालियों के माध्यम से बाहर हौदी में आता है और फिर बड़ी नालियों में चला जाता है। नगर में कुओं का प्रबंध था । ये कुएँ पक्की ईटों के बने थे। अकेले मुअनजो-दड़ो नगर में लगभग 700 कुएँ थे। यहाँ का महाकुंड लगभग चालीस फुट लम्बा ओर पच्चीस फुट चौड़ा है| कुंड के पास आठ स्नानागार हैं| कुंड में बाहर के अशुद्ध पानी को न आने देने का ध्यान रखा गया| इस प्रकार मुअनजो-दड़ो में पानी की व्यवस्था सभ्य समाज की पहचान है। सिन्धु घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कह सकते हैं|

मेसोपोटामिया के शिलालेखों में मुअनजो-दड़ो के लिए 'मेलुहा' शब्द का प्रयोग मिलता है|

संसार की मुख्य प्राचीन सभ्यताएँ:- मिस्र की नील घाटी की सभ्यता, मेसोपोटामिया की सभ्यता, बेबीलोन की सभ्यता, सिन्धु घाटी की सभ्यता (सबसे प्राचीन)

मुअनजो-दड़ो में पर्यटन स्थल:- बौद्ध स्तूप, महाकुंड, अजायबघर

कुलधरा:-कुलधरा जैसलमेर के मुहाने पर पीले पत्थरों से बने घरों वाला सुन्दर गाँव है। कुलधरा के स्वाभिमानी लोग लगभग 150 वर्ष पूर्व राजा से तकरार होने पर गाँव खाली करके चले गए। उनके घर अब खण्डहर बन चुके हैं, परंतु ढहे नहीं | घरों की दीवारें और खिड़कियाँ ऐसी हैं मानो सुबह लोग काम पर गए हैं और साँझ होते ही लौट आएंगे |अतः कुलधरा की बस्ती और मुअनजो-दड़ो के खण्डहर अपने काल के इतिहास का दर्शन कराते हैं।

1 हम सिंधु घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति किस आधार पर कह सकते हैं?

(क) यह सभ्यता नदी के किनारे बसी है। मुअनजो-दड़ो के निकट सिंधु नदी बहती है। मकानों में अलग-अलग स्नानागार बने हुए हैं।

(ख) यहाँ पीने के पानी के लिए लगभग सात सौ कुएँ मिले हैं। ये कुएँ पानी की बहुतायत सिद्ध करते हैं।

(ग) जल-निकासी के लिए नालियाँ व नाले बने हुए हैं जो पकी ईंटों से बने हैं। ये ईटों से ढँके हुए हैं। आज भी शहरों में जल-निकासी के लिए ऐसी व्यवस्था की जाती है।

(घ) उपर्युक्त सभी सही हैं |

2 "सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।" यह बात किससे स्पष्ट नहीं होती?

(क) सिंधु-सभ्यता से जो अवशेष प्राप्त हुए हैं उनमें औजार तो हैं, पर हथियार नहीं हैं।

(ख) उनकी नगर योजना भी उनकी समझ का पुख्ता प्रमाण है।

(ग) हड़प्पा संस्कृति में भव्य राजप्रासाद मिले हैं और मंदिर, राजाओं व महतों की समाधियाँ।

(घ) जो कुछ उन्होंने नगरों, गलियों, सड़कों को साफ़-सुथरा रखने की विधि अपनाई, वह उनकी समझ को ही दर्शाती है।

3 मुअनजोदड़ो और हड़प्पा के बारे में क्या सही नहीं है?

(क) मुअनजोदड़ो और हड़प्पा प्राचीन भारत के ही नहीं, दुनिया के दो सबसे पुराने नियोजित शहर माने जाते हैं।

(ख) मुअनजोदड़ो ताम्र काल के शहरों में सबसे छोटा है।

(ग) सैकड़ों मील दूर हड़प्पा के ज्यादातर साक्ष्य रेललाइन बिछने के दौरान विकास की भेंट चढ़ गए।

(घ) मुअनजोदड़ो के बारे में धारणा है कि अपने दौर में वह घाटी की सभ्यता का केंद्र रहा होगा। यानी एक तरह की राजधानी।

4 सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया?

(क) सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्त्व ज्यादा था।

(ख) यहाँ प्राप्त नगर-नियोजन, धातु व पत्थर की मूर्तियाँ, मृद्-भांड, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति व पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुनिर्मित मुहरें, खिलौने, आभूषण तथा सुघड़ अक्षरों का लिपिरूप आदि सब कुछ इसे तकनीक-सिद्ध से अधिक कला-सिद्ध जाहिर करता है।

(ग) यहाँ से कोई हथियार नहीं मिला। इस बात को लेकर विद्वानों का मानना है कि यहाँ अनुशासन जरूर था, परंतु सैन्य सभ्यता का नहीं।

(घ) उपर्युक्त सभी सही हैं |

<u>पाठ 4 : डायरी के पन्ने: ऐन फ्रैंक</u>

'डायरी के पन्ने' पाठ ऐन फ्रैंक द्वारा डच भाषा में लिखी गई 'द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल' नामक पुस्तक से लिया गया है। यह 1947 में ऐन फ्रैंक की मृत्यु के बाद उसके पिता मिस्टर ऑटो फ्रैंक ने प्रकाशित कराई। 'डायरी के पन्ने' पाठ में 'द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल' नामक ऐन फ्रैंक की डायरी के कुछ अंश दिए गए हैं| 'द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल' 13 वर्षीय ऐन फ्रैंक द्वारा दो साल अज्ञातवास के दौरान 'किट्टी' (ऐन फ्रैंक की गुड़ियाजो उसे उपहार में मिली थी) को संबोधित करके लिखी गई थी| ऐन फ्रैंक को तेरहवें जन्मदिन पर एक डायरी उपहार में मिली थी| 1933 में फ्रैंकफर्ट के नगरनिगम चुनाव में हिटलर की नाजी पार्टी जीत गई| इसके बाद यहूदी-विरोधी प्रदर्शन बढ़ने लगे| ऐन फ्रैंक का परिवार असुरक्षित महसूस करते हुए नीदरलैंड के एम्सटर्डम शहर में जा बसा| द्वितीय विश्वयुद्ध (1939) के बाद 1940 में नीदरलैंड पर जर्मनी का कब्ज़ा हो गया और यहूदियों के उत्पीड़न का दौर शुरु हो गया| गे स्टापो (हिटलर की खुफिया पुलिस) छापे मारकर यहूदियों को अज्ञातवास से ढूँढ निकालती और यातना-गृह में भेज देती| हिटलर के शासन में यहूदियों को विवश किया जाता था कि वे अपनी पहचान के लिए 'पीला सितारा'पहनें| इन परिस्थितियों के कारण 1942 के जुलाई मास में मूर्त्जे (बिल्ली) ही एकमात्र जीवित प्राणी थी जिसे पड़ौसियों के यहाँ छोडकर फ्रैंक परिवार जिसमें माता-पिता, तेरह वर्ष की ऐन, उसकी बड़ी बहन मार्गोट तथा दूसरा परिवार –वानदान परिवार और उनका बेटा पीटर तथा इनके साथ एक अन्य व्यक्ति मिस्टर डसेल दो साल तक गुप्त आवास में रहे| अज्ञातवास उनके पिता मिस्टर ऑटो फ्रैंक का दफ्तर ही था| ऐन फ्रैंक ने नारी स्वतंत्रता को महत्त्व दिया, उसने नारी को एक सिपाही के बराबर सम्मान देने की बात कही|

ऐन फ्रैंक की डायरी के द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका, हिटलर एवं नाजियों द्वारा यहूदियों का उत्पीड़न, डर, भुखमरी, गरीबी, आतंक, मानवीय संवेदनाएँ, प्रेम, घृणा, तेरह साल की उम्र के सपने, कल्पनाएँ, बाहरी दुनिया से अलग-थलग पड़ जाने की पीड़ा, मानसिक और शारीरिक जरूरतें, हँसी-मज़ाक, अकेलापन आदि का जीवंत रूप देखने को मिलता है| ऐन ने डायरी के माध्यम से न केवल निजी सुख-दुःख और भावनाओं को व्यक्त किया, बल्कि लगभग साठ लाख यहूदी समुदाय की दुख भरी जिन्दगी को लिपिबद्ध किया है।

मि. डसेल- ऐन के पिता के साथ काम करते थे। वे ऐन व परिवार के साथ अज्ञातवास में रहे थे। पीटर-मिस्टर और मिसेज वानदान का बेटा था | वह ऐन का हमउम्र था। ऐन का उसके प्रति आकर्षण बढ़ने लगा था। ऐन के जन्मदिन पर पीटर

ने उसे फूलों का गुलदस्ता भेंट किया था| वह साधारणतया शांतिप्रिय, सहज व आत्मीय व्यवहार करने वाला था। 'डायरी के पन्ने' मूलत: डच भाषा में लिखी गई | इसका हिन्दी अनुवाद सूरजप्रकाश ने किया है।

1 फ्रैंक परिवार ने गोल्डशिम्ड्ट के लिए क्या नोट छोड़ा ?

(क) मूर्ज्रे नामक बिल्ली को पड़ोसियों के यहाँ छोडने का (ख) घर की देखभाल करने का

(ग) घर के पालतू जानवरों की देखभाल करने का (घ) उपर्युक्त सभी

2 ऐन फ्रैंक ने डायरी लिखते समय 'तुम्हारी ऐन' कहकर किसे संबोधित करती थी?

(क) अपने पिता को (ख) अपनी माँ को (ग) अपनी बहन को (घ) किट्टी नामक गुड़िया को

3 फ्रैंक परिवार ने अज्ञातवास में जाने के लिए कौनसी तिथि निश्चित की थी?

(क) 15 मई, 1940 (ख) 16 जुलाई, 1942 (ग) 16 फरवरी, 1942 (घ) 15 दिसंबर, 1943

4 ऐन फ्रैंक का किसके प्रति आकर्षण बढ़ने लगा था?

(क) पीटर (ख) मि. वानदान (ग) मि.डसेल (घ) इनमें से कोई नहीं

<u>कविता की रचना प्रक्रिया</u>

प्र. कविता क्या है?

उ. • कविता साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपना विशिष्ट स्थान रखती है|

- कविता कवि की सौंदर्यानुभूति की आकाँक्षाओं –अपेक्षाओं की अभिव्यक्ति है |
- कविता हमारी संवेदनाओं के निकट होती है | कविता के मूल में संवेदना है, राग तत्त्व है |
- यह संवेदना सम्पूर्ण सृष्टि से जुड़ने और उसे अपना बना लेने का बोध है |

प्र. कविता कैसे बनती है ?

उ. कविता, भाषा के उपकरणों के माध्यम से विभिन्न विषयों एवं दैनिक विषयों जीवन से सामग्री जुटाती है | वह अपनी इच्छानुसार शब्दों को जुटाती है और उसे लय से गठित करती है |

शब्दों का खेल, परिवेश के अनुसार शब्द चयन, लय तुक वाक्य रचना, यति, बिम्ब, संक्षिप्तता के साथ –साथ विभिन्न अर्थ स्तर आदि से कविता बनती है |

प्र. शब्दों का चयन

उ. • कविता का पहला उपकरण है-शब्द|

• तुकबंदी के प्रयास से धीरे –धीरे उनकी रचनात्मकता आकार लेने लगती है और प्रयास के द्वारा नए आयाम खुलते हैं –जैसे

- शब्द और ध्वनि का खेल |
- खेल – खेल में अर्थ के नए आयाम |
- शब्दों के खेल – शब्दों की व्यवस्था|

प्र. बिम्ब और छंद

उ. कविता को इंद्रियों से पकड़ने में सहायक |

- बाह्य संवेदनाएं मन के स्तर पर बिम्ब के रूप से बदल जाती है |
- कुछ विशेष शब्दों को सुनकर अनायास मन के भीतर कुछ चित्र कौंध जाते हैं |
- ये स्मृति चित्र ही शब्दों के सहारे कविता का बिम्ब निर्मित करती है | "सुमित्रानंदन पंत ने कविता के लिए चित्र – भाषा की आवश्यकता पर बल दिया है क्योंकि चित्र या बिम्बों का प्रभाव मन पर अधिक पड़ता है|"

प्र. कविता के मुख्य घटक (तत्व)

उ. • भाषा का सम्यक ज्ञान

- शब्द विन्यास
- छंद विषयक बुनियादी जानकारी

- अनुभव और कल्पना का सामंजस्य
- सहज सम्प्रेषण शक्ति
- भाव एवं विचार की अनुभूति

प्र. कविता में शब्दों का क्या महत्त्व है?

उ. कविता की अनजानी दुनिया का सबसे पहला उपकरण है –शब्द| दरअसल रचनात्मकता सबके अन्दर होती है| तुकबंदी के प्रयास में धीरे –धीरे उनकी रचनात्मकता आकार लेने लगती है | इस प्रयास के द्वारा नए आयाम खुलते हैं | शब्दों का यह खेल धीरे –धीरे ऐसी दुनिया में ले जाता है, जहाँ रिद्म है, लय और एक व्यवस्था है |

प्र. कविता की आवश्यकता क्यों है ?

उ. कविता इतनी प्रयोजनीय वस्तु है कि संसार की सभ्य और असभ्य सभी जातियों में यह पाई जाती है | संसार के अनेक कृत्रिम व्यापारों में फंसे रहने से मनुष्य की मनुष्यता समाप्त होने का डर रहता है | अत एव मानुषी प्रकृति को जागृत रखने के लिए कविता रूपी औषधि का निर्माण हुआ | अनुभव व ज्ञान के आधार पर रची गई यह विधा मनुष्य को जीवन में बहुत कुछ खास सिखाने में सहायक है जिससे इसकी आवश्यकता बढ़ जाती है | इसी सामग्री के आधार पर अन्य दो व तीन अंक के प्रश्न बन सकते हैं | ठीक इसी प्रकार जैसे ऊपर उदाहरण स्वरूप दिए गए हैं"

<u>कहानी की रचना प्रक्रिया</u>

प्र. कहानी क्या क्या है ?

उ. किसी घटना, पात्र या समय का क्रमबद्ध ब्यौरा जिसमें परिवेश हो, कथा का क्रमिक विकास हो, चरम उत्कर्ष और बिंदु हो, उसे कहानी कहा जाता है |

कहानी के तत्त्व – कथानक, देशकाल और पर्यावरण, पात्र, संवाद, चरम उत्कर्ष, उद्देश्य

प्र. कहानी का केंद्र बिंदु – कथानक

उ. • कहानी का वह संक्षिप्त रूप जिसमें प्रारम्भ से अंत तक कहानी की सभी घटनाओं और पत्रों का उल्लेख किया गया हो, वह कथानक कहलाता है |

• कथानक कहानी का प्रारंभिक नक्शा होता है |

• कहानी का कथानक आमतौर पर कहानीकार के मन में किसी घटना, जानकारी, अनुभव या कल्पना के कारण आता है |

• इसके बाद कथाकार आमतौर पर उसे विस्तार देने में जुट जाता है

• द्वंद्व के तत्त्व कथानक को आगे ही नहीं बढ़ाते बल्कि उसे रोचक भी बनाए रखते हैं|

प्र. कहानी में संवादों का महत्त्व-

उ. • संवाद ही कहानी को स्थापित, विकसित और कहानी को गति प्रदान करते हैं, आगे बढ़ाते हैं |

• जो घटना या प्रतिक्रिया कहानीकार होती हुई नहीं दिखा सकता उसे संवादों के माध्यम से सामने लाता है |

• संवाद पात्रों के स्वभाव और पूरी पृष्ठभूमि के अनुकूल हों वह उसके विश्वासों, आदर्शों तथा स्थितियों के भी अनुकूल होना चाहिए |

प्र. कहानी का चरम उत्कर्ष –

उ. कहानी का चरम उत्कर्ष ही कहानी के महत् उद्देश्य को सामने लाने में मदद करता है |

अतः वह जितना स्पष्ट, संक्षिप्त और रोचक होगा, उद्देश्य उतना खिलकर सामने आएगा और पाठक के मन पर प्रभाव भी डालेगा |

<u>नाटक की रचना प्रक्रिया</u>

प्र. नाटक क्या हैं?

उ. हमारी भारतीय परंपरा में नाटक को दृश्य काव्य की संज्ञा दी गई है|

• जहाँ से नाटक अपनी निजी एवं विशेष प्रकृति ग्रहण करता है- वह है उसका लिखित रूप से दृश्यता की ओर अग्रसर होना|

• जहाँ साहित्य की अन्य विधाएँ अपने लिखित रूप में ही एक निश्चित और अंतिम रूप को प्राप्त करा लेती है, वहीं नाटक अपने लिखित रूप से एक आयामी ही होता है|

प्र. नाटक के तत्त्व क्या-क्या है?

उ. समय का बंधन, शब्द, कथ्य, संवाद, चरित्रों का विकास, शिल्प और संरचना, उद्देश्य आदि

प्र. नाटक की मूल विशेषता क्या है? समझाइए| समय के बंधन के बारे में लिखें -

उ. • समय का यह बंधन नाटककार को उसकी नाटक को एक निश्चित समय में पूरा करवाने की क्षमता को दर्शाता है|

• एक नाटक को शुरू से लेकर अंत तक एक निश्चित समय सीमा के भीतर पूरा करना होता है

• एक नाटककार को यह सोचना भी जरूरी है कि दर्शक कितनी देर किसी कहानी को अपने सामने घटित होते देख सकता हैं

• साथ ही नाटक में हर एक चरित्र का पूरा विकास होना भी जरूरी है, इसलिए नाटक में समय का ध्यान रखना जरूरी होता है |

प्र. नाटक में भाषा के महत्त्व को समझाएँ |

उ. • नाटककार के लिए यह जरुरी है कि वह अधिक से अधिक संक्षिप्त और सांकेतिक भाषा का प्रयोग करें जो अपने आप में वर्णित न होकर क्रियात्मक अधिक हो|

• वे शब्द अपने अर्थ से ज्यादा व्यंजना की ओर ले जाए}

• एक अच्छा नाटक वही होता है जो लिखे या बोले गए शब्दों से ज्यादा वह ध्वनित करें जो लिखा या बोला नहीं गया हो|

प्र. नाटक का सशक्त माध्यम-संवाद

उ. नाटक के लिए तनाव, उत्सुकता, रहस्य, रोमांच और अंत में उपसंहार जैसे तत्व अनिवार्य हैं। इसके लिए विरोधी विचारधाराओं का संवाद जरुरी है।

संवादों का अपने आप में वर्णित या चित्रित न होकर क्रियात्मक होना दृश्यात्मक होना और लिखे तथा बोले जाने वाले संवादों से भी ज्यादा उन संवादों के पीछे निहित अनलिखे एवं अनकहे संवादों की ओर ले जाना नाटक को सफल बनाते हैं।

प्र. नाटक के प्रकार (शिल्प और संरचना के आधार पर) -

उ. • शास्त्रीय नाटक

• लोक नाटक - लिखित नहीं मौखिक

• पारसी नाटक- शेरों शायरी और गीत संगीत और रंजित संवादों पर आधारित

• यथार्थवादी नाटक

<u>पत्र लेखन</u>

प्र. दिन-प्रतिदिन बढ़ती महँगाई के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए 'नवभारत टाइम्स' के संपादक को पत्र।

उ. प्रतिष्ठा में -

श्रीमान संपादक महोदय
नवभारत टाइम्स
बहादुरशाह जफ़र मार्ग, नई दिल्ली।

विषय- बढ़ती महँगाई के संदर्भ में।

महोदय

मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से प्रशासन व नेताओं का ध्यान बढ़ती महँगाई की तरफ दिलाना चाहता हूँ। आज जीवन के लिए उपयोगी हर वस्तु आम आदमी की पहुँच से बाहर होती जा रही है। रोजमर्रा की वस्तुओं जैसे-सब्जी, दूध, फल, दालें आदि-के दाम नित नई ऊँचाइयों को छू रहे हैं। सरकार इस महँ करने की कोशिश नहीं करती, अपितु कम पैदावार का बहाना बनाकर अपनी कमजोरी को छिपा रही है। जनता की आमदनी महँगाई के अनुपात में बढ़ नहीं रही है। गरीब को दाल-रोटी के लिए भी संघर्ष करना पड़ रहा है। जमाखोरी बड़े स्तर पर हो रही है परंतु प्रशासन उन पर कोई कारवाई नहीं करता। महँगाई की चौतरफा मार से जनता बेहद आक्रोशित है।

आशा है आप मेरे विचारों को अपने समाचार-पत्र में स्थान देंगे, ताकि सरकार का ध्यान इस समस्या की ओर आकृष्ट हो।

धन्यवाद।

भवदीय

दिनांक: 22 मार्च 2021

.... नाम ....

<u>फीचर लेखन</u>

समकालीन घटना या किसी भी क्षेत्र विशेष की विशिष्ट जानकारी के सचित्र तथा मोहक विवरण को फीचर कहा जाता है। इसमें मनोरंजक ढंग से तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है। इसके संवादों में गहराई होती है। यह सुव्यवस्थित, सृजनात्मक व आत्मनिष्ठ लेखन है, जिसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना होता है।

फीचर में विस्तार की अपेक्षा होती है। इसकी अपनी एक अलग शैली होती है। एक विषय पर लिखा गया फीचर प्रस्तुति विविधता के कारण अलग अंदाज प्रस्तुत करता है। इसमें भूत, वर्तमान तथा भविष्य का समावेश हो सकता है। इसमें तथ्य, कथन व कल्पना का उपयोग किया जा सकता है। फीचर में आँकड़े, फोटो, कार्टून, चार्ट, नक्शे आदि का उपयोग उसे रोचक बना देता है।

फीचर संबंधी मुख्य बातें

- फीचर को सजीव बनाने के लिए उसमें उस विषय से जुड़े लोगों की मौजूदगी जरूरी है।
- फीचर के कथ्य को पात्रों के माध्यम से बतलाना चाहिए।
- कहानी को बताने का अंदाज ऐसा हो कि पाठक यह महसूस करे कि वे खुद देख और सुन रहे हैं।
- फीचर मनोरंजक व सूचनात्मक होना चाहिए।
- फीचर शोध रिपोर्ट नहीं है।
- इसे किसी बैठक या सभा के कार्यवाही विवरण की तरह नहीं लिखा जाना चाहिए।
- फीचर का कोई-न-कोई उद्देश्य होना चाहिए। उस उद्देश्य के इर्द-गिर्द ही सभी प्रासंगिक सूचनाएँ तथ्य और विचार गुंथे होने चाहिए।
- फीचर तथ्यों, सूचनाओं और विचारों पर आधारित कथात्मक विवरण और विश्लेषण होता है।
- फीचर लेखन का कोई निश्चित ढाँचा या फार्मूला नहीं होता। इसे कहीं से भी अर्थात् प्रारंभ, मध्य या अंत से शुरू किया जा सकता है।
- फीचर का हर पैराग्राफ अपने पहले के पैराग्राफ से सहज तरीके से जुड़ा होना चाहिए तथा उनमें प्रारंभ से अंत तक प्रवाह व गति रहनी चाहिए।
- पैराग्राफ छोटे होने चाहिए तथा एक पैराग्राफ में एक पहलू पर ही फोकस करना चाहिए।

'बस्ते का बढ़ता बोझ' या 'भारी बस्तों के बोझ से दबता बचपन' विषय पर फीचर लिखिए।

बस्ते का बढ़ता बोझ

हर जगह छोटे-छोटे बच्चों के कंधों पर भारी बस्ते लदे हुए दिखाई देते हैं। कुछ बच्चों से बड़ा उनका बस्ता होता है। यह दृश्य देखकर लगता है कि बच्चों को किताबों के बोझ से लाद देना चाहते हैं। इसके लिए समाज अधिक जिम्मेदार है। सरकारी स्तर पर छोटी कक्षाओं में बहुत कम पुस्तकें होती हैं, परंतु निजी स्तर के स्कूलों में बच्चों के सर्वांगीण विकास के नाम पर बच्चों व उनके माता-पिता का शोषण किया जाता है। हर स्कूल विभिन्न विषयों की पुस्तकें लगा देते हैं। इसके कारण बच्चे का बचपन समाप्त हो जाता है। वे हर समय पुस्तकों के ढेर में दबा रहता है। खेलने का समय उसे नहीं दिया जाता। अधिक बोझ के कारण उसका शारीरिक विकास भी कम होता है।

<u>आलेख लेखन</u>

आलेख वास्तव में लेख का ही प्रतिरूप होता है। यह आकार में लेख से बड़ा होता है। कई लोग इसे निबंध का रूप भी मानते हैं जो कि उचित भी है। लेख में सामान्यत: किसी एक विषय से संबंधित विचार होते हैं। आलेख में 'आ' उपसर्ग

लगता है जो कि यह प्रकट करता है कि आलेख सम्यक् और संपूर्ण होना चाहिए। आलेख गद्य की वह विधा है जो किसी एक विषय पर सर्वांगपूर्ण और सम्यक् विचार प्रस्तुत करती है।

- नवीनता एवं ताजगी।
- जिज्ञासाशील।
- विचार स्पष्ट और बेबाकीपूर्ण।
- भाषा सहज, सरल और प्रभावशाली।
- एक ही बात पुनः न लिखी जाए।
- विश्लेषण शैली का प्रयोग।
- आलेख ज्वलंत मुद्दों, विषयों और महत्त्वपूर्ण चरित्रों पर लिखा जाना चाहिए।
- आलेख का आकार विस्तार पूर्ण नहीं होना चाहिए।

भारतीय क्रिकेट का सरताज : सचिन तेंदुलकर

भारत के लोग जिन-जिन हस्तियों के दीवाने हैं-उनमें एक गौरवशाली नाम है- भारत रतन सचिन तेंदुलकर। संसार-भर में एक यही खिलाड़ी है जिसने टेस्ट-क्रिकेट के साथ-साथ वन-डे क्रिकेट में भी सर्वाधिक शतक बनाए हैं। सचिन इतनी ऊँचाइयों पर पहुँचने पर भी मासूम और विनयी है। अहंकार तो उसे छू तक नहीं गया है। अब भी उसे अपने बचपन के दोस्तों के साथ वैसा ही लगाव है जैसा पहले था। सचिन अपने परिवार के साथ बिताए हुए क्षणों को सर्वाधिक प्रिय क्षण मानता है। सचिन ने केवल 15 वर्ष की आयु में पाकिस्तान की धरती पर अपने क्रिकेट-जीवन का पहला शतक जमाया था जो अपने-आप में एक रिकार्ड है। उसके बाद एक-पर-एक रिकार्ड बनते चले गए। कुछ क्रिकेट-प्रेमी सचिन को क्रिकेट का भगवान तक कहते हैं।